

शोधनिर्देशक  
रमेशकुमार भट्टराई  
सहप्राध्यापक

## ‘मालती’ खण्डकाव्यको कृतिपरक अध्ययन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र  
सङ्घाय अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली  
विषयको स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षको  
दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि  
प्रस्तुत

## शोधपत्र

### शोधार्थी

जागेन्द्र प्रसाद भेटुवाल  
नेपाली शिक्षण समिति  
रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस  
प्रदर्शनीमार्ग, काठमाडौँ

२०६८

## सिफारिस पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्घाय अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस नेपाली विषयका छात्र जागेन्द्र प्रसाद भेटुवालले स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षको दसौँ पत्रको प्रयोजनका लागि **मालती खण्डकाव्यको कृतिपरक अध्ययन** शीर्षकको प्रस्तुत शोधपत्र मेरा निर्देशनमा तयार पार्नु भएको हो। निजले परिश्रम र लगनशीलता पूर्वक गरेको यस शोधकार्यबाट म सन्तुष्ट छु। यस शोधपत्रको मूल्याङ्कनका लागि रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस नेपाली शिक्षण समिति समक्ष पेस गर्न सिफारिस गर्दछु।

मिति:-२०६८/०१/२४

.....  
रमेशकुमार भट्टराई  
सहप्राध्यापक  
नेपाली शिक्षण समिति  
रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस  
प्रदर्शनी मार्ग, काठमाडौँ

त्रिभुवन विश्वविद्यालय

रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस

प्रदर्शनीमार्ग, काठमाडौं

मिति:-२०६८/०१/२९

### स्वीकृति पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्काय, रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पसका छात्र जागेन्द्र प्रसाद भेटुवालले स्नातकोत्तर तह (एम.ए) नेपाली विषयको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत गर्नु भएको मालती खण्डकाव्यको कृतिपरक अध्ययन शीर्षकको शोधपत्र स्वीकृत गरिएको छ ।

.....  
रमेशकुमार भट्टराई

सहप्राध्यापक

शोधनिर्देशक

.....  
गोपालप्रसाद गैरे

उपप्राध्यापक

बाह्य परीक्षक

.....  
तुलसीमान श्रेष्ठ

सहप्राध्यापक

विभागीय प्रमुख

## कृतज्ञताज्ञापन

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र-सङ्घाय अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली शिक्षण समितिको स्नातकोत्तर तह द्वितीय वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि प्रस्तुत मालती खण्डकाव्यको कृतिपरक अध्ययन शीर्षकको शोधपत्र मैले आदरणीय गुरु सह-प्रध्यापक श्री रमेशकुमार भट्टराईज्यूको निर्देशनमा तयार पारेको हुँ । उहाँको सद्भावपूर्ण सल्लाह, सुझाव, सहयोग र कुशल निर्देशनप्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

शोधप्रस्तावलाई विभागीय स्वीकृति प्रदान गरी प्रस्तुत शीर्षकमा शोधकार्य गर्ने अवसर प्रदान गर्नुहुने रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस, नेपाली विभाग स्नातकोत्तर शिक्षण कार्यक्रममा विभागीय प्रमुख श्रद्धेय गुरु श्री.तुलसीमान श्रेष्ठप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु। आफ्नो कृतिलाई शोधकार्यका लागि अनुमति दिनुका साथै उचित मार्गदर्शन गराउनुहुने शोधनायक वाल्मीकि विद्यापीठका सहायक प्राचार्य डा.लेख प्रसाद निरौलाज्यूप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु । साथै यो शोधपत्र सम्बन्धी समस्यालाई समाधानमुखी भएर सल्लाह दिनुहुने रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस नेपाली विभागका संपूर्ण श्रद्धेय गुरुहरूप्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

प्रस्तुत शोधपत्रका सम्बन्धमा आएका समस्या समाधान गरी शोधकार्य सम्पन्न गर्न हौसला, प्रेरणा दिनुहुने श्रद्धेय गुरु जगतप्रसाद उपाध्याय र देवी नेपालप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

यसैगरी अध्ययनलाई यस तहसम्म पुऱ्याई अमूल्य योगदान गर्नुहुने पूज्य बुबाआमा कृष्ण प्रसाद भेटुवाल, राधिका भेटुवाल एवं काका विष्णु प्रसाद भेटुवालप्रति म सदैव ऋणी रहनेछु । मलाई अध्यापनका लागि आवश्यक समय उपलब्ध गराई सहयोग गर्नुहुने घर परिवारका सम्पूर्ण सदस्यलाई धन्यवाद दिन चाहन्छु ।

शोधकार्यका लागि आवश्यक पुस्तकालयीय सामग्री उपलब्ध गराई सहयोग पुऱ्याउने रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस पुस्तकालय, वाल्मीकि पुस्तकालयलाई धन्यवाद दिन्छु ।

यस शोधपत्रको पाण्डुलिपिलाई टङ्कण गरी सहयोग पुऱ्याउने बहिनी सीता भेटुवाल, फोटोकपि प्रिन्ट आउट गर्न सहयोग पुऱ्याउने सुरेश श्रेष्ठ, रेश्मा महर्जन एवम् शोधकार्यका लागि आवश्यक सुझाव सहयोग उपलब्ध गराउनु हुने मित्र सुवास पुरीलाई धन्यवाद दिन चाहन्छु । शोधकार्यमा हौसला प्रदान गरी अगाडि बढ्न प्रोत्साहित गर्नुहुने सम्पूर्ण मित्रहरू पनि धन्यवादका पात्र हुनुहन्छ ।

अन्त्यमा समुचित मूल्याङ्कनका लागि यो शोधपत्र त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तर्गत रत्न राज्यलक्ष्मी क्याम्पस नेपाली स्नातकोत्तर शिक्षण विभाग समक्ष प्रस्तुत गर्दछु ।

समूह : २०६४-६५

त्रि.वि.द.नं. ६-३-४०-१७०२-२००७

मिति : २०६८/०१/२

.....  
शोधार्थी

जागेन्द्र प्रसाद भेटुवाल

रत्नराज्यलक्ष्मी क्याम्पस

प्रदर्शनीमार्ग, काठमाडौं

## विषय सूची

पृष्ठ

परिच्छेद : एक

शोधपरिचय

|       |                                     |   |
|-------|-------------------------------------|---|
| १.१   | विषय परिचय                          | १ |
| १.२   | समस्या कथन                          | १ |
| १.३   | उद्देश्य कथन                        | २ |
| १.४   | पूर्वकार्यको समीक्षा                | २ |
| १.५   | अध्ययनको औचित्य, महत्त्व र उपयोगिता | ३ |
| १.६   | शोधकार्यको सीमाङ्कन                 | ४ |
| १.७   | शोधविधि                             | ४ |
| १.७.१ | सामग्री सङ्कलन विधि                 | ४ |
| १.७.२ | सैद्धान्तिक आधार र ढाँचा            | ५ |
| १.८   | शोधपत्रको रूपरेखा                   | ५ |

परिच्छेद .दुई

निरौलाको सङ्क्षिप्त जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको रूपरेखा

|       |  |   |
|-------|--|---|
| २.१   | कवि लेख प्रसाद निरौलाको सङ्क्षिप्त जीवनी | ६ |
| २.१.१ | विषयपरिचय                                | ६ |
| २.१.२ | जन्म र जन्मस्थान                         | ६ |
| २.१.३ | विवाह र पारिवारिक पृष्ठभूमि              | ६ |
| २.१.४ | शिक्षा                                   | ७ |
| २.१.५ | पेसा                                     | ७ |

|       |                                    |    |
|-------|------------------------------------|----|
| २.१.६ | साहित्य क्षेत्रमा संलग्नता         | ८  |
| २.१.७ | पुरस्कार र सम्मान                  | ८  |
| २.२   | कवि लेखप्रसाद निरौलाको व्यक्तित्व  | ९  |
| २.२.१ | कवि व्यक्तित्व                     | ९  |
| २.२.२ | खण्डकाव्यकार व्यक्तित्व            | १० |
| २.२.३ | निबन्धकार व्यक्तित्व               | १० |
| २.२.४ | समालोचक व्यक्तित्व                 | १० |
| २.३   | लेख प्रसाद निरौलाको साहित्य यात्रा | ११ |
| २.४   | कवि निरौलाका साहित्यिक प्रवृत्ति   | १२ |
| २.५   | निष्कर्ष                           | १३ |

### परिच्छेद .तीन

#### खण्डकाव्यको स्वरूप र नेपाली खण्डकाव्यको परम्परा

|       |  |    |
|-------|--|----|
| ३.१   | खण्डकाव्यको सैद्धान्तिक स्वरूप                     | १४ |
| ३.१.१ | खण्डकाव्यको परिचय                                  | १४ |
| ३.१.२ | खण्डकाव्य सम्बन्धी पूर्वीय मान्यता                 | १६ |
| ३.१.३ | निष्कर्ष   | १८ |
| ३.१.४ | खण्डकाव्य सम्बन्धी नेपाली साहित्यशास्त्रीय मान्यता | १९ |
| ३.१.५ | निष्कर्ष   | २१ |
| ३.१.६ | पाश्चात्य काव्यशास्त्रीहरूका दृष्टिमा खण्डकाव्य    | २१ |
| ३.२   | खण्डकाव्यका तत्त्वहरू                              | २२ |
| ३.२.१ | शीर्षक   | २४ |
| ३.२.२ | कथानक/कथावस्तु                                     | २४ |
| ३.२.३ | पात्र  | २५ |
| ३.२.४ | परिवेश   | २५ |
| ३.२.५ | रस वा भाव  | २६ |
| ३.२.६ | केन्द्रीय कथ्य                                     | २६ |
| ३.२.७ | लय   | २६ |

|        |                              |    |
|--------|------------------------------|----|
| ३.२.८  | भाषशैली                      | २७ |
| ३.२.९  | कथन पद्धति                   | २७ |
| ३.२.१० | अलङ्कार तथा प्रतीक           | २८ |
| ३.२.११ | सर्ग                         | २९ |
| ३.२.१२ | गुण                          | २९ |
| ३.२.१३ | रीति                         | ३० |
| ३.३    | खण्डकाव्यको वर्गीकरण         | ३० |
| ३.४    | नेपाली खण्डकाव्यको विकासक्रम | ३७ |
| ३.४.१  | प्राथमिक काल                 | ३७ |
| ३.४.२  | माध्यमिक काल                 | ३९ |
| ३.४.३  | आधुनिक काल                   | ४२ |

### परिच्छेद : चार

#### मालती खण्डकाव्यको कृतिपरक अध्ययन

|         |  |    |
|---------|--|----|
| ४.१     | विषय परिचय   | ४९ |
| ४.२     | रचना र प्रकाशन                                     | ४९ |
| ४.३     | प्रेरणा र प्रभाव ग्रहण                             | ५० |
| ४.४     | शीर्षक चयन   | ५० |
| ४.५     | खण्डकाव्य तत्त्वका आधारमा मालती खण्डकाव्यको अध्ययन | ५१ |
| ४.५.१   | विषयवस्तु  | ५१ |
| ४.५.२   | कथानक / कथावस्तु                                   | ५१ |
| ४.५.३   | पात्र  | ५३ |
| ४.५.३.१ | मालती  | ५३ |
| ४.५.३.२ | अशोक   | ५५ |
| ४.५.३.३ | आमा  | ५७ |
| ४.५.४   | परिवेश / देशकाल वातावरण                            | ५८ |
| ४.५.५   | द्वन्द्व   | ५९ |
| ४.५.६   | रस वा भाव  | ६० |
| ४.५.७   | केन्द्रीय कथ्य                                     | ६२ |

|         |                                    |    |
|---------|------------------------------------|----|
| ४.५.७.१ | मालती खण्डकाव्य र प्रगतिवाद        | ६३ |
| ४.५.७.२ | मालती खण्डकाव्य र मानवतावाद        | ६५ |
| ४.५.८   | कथन पद्धति                         | ६७ |
| ४.५.९   | संरचनागत पक्ष (सर्गयोजना तथा आयाम) | ६८ |
| ४.५.१०  | लय                                 | ६९ |
| ४.५.११  | बिम्ब तथा प्रतीक                   | ७१ |
| ४.५.१२  | अलङ्कार                            | ७२ |
| ४.५.१३  | भाषाशैली                           | ७५ |
| ४.५.१४  | उद्देश्य                           | ७५ |
| ४.६     | मालती खण्डकाव्यमा गुणको अवस्था     | ७६ |
| ४.६.१   | प्रसाद गुण                         | ७६ |
| ४.६.२   | ओज गुण                             | ७७ |
| ४.७     | मालती खण्डकाव्यमा रीतिको अवस्था    | ७८ |
| ४.७.१   | गौडी रीति                          | ७८ |
| ४.७.२   | वैदर्भी रीति                       | ७८ |
| ४.७.३   | पाञ्चाली                           | ७९ |
| ४.८     | निष्कर्ष                           | ८० |

**परिच्छेद : पाँच**

|                   |         |
|-------------------|---------|
| उपसंहार           | ८२      |
| सन्दर्भग्रन्थसूची | ८४      |
| परिशिष्ट          | क.....भ |

## सङ्क्षेपीकृत शब्दसूची

सङ्क्षिप्त रूप

इ.पू.

चौ.थो.

डा.

ते.थो.

दो.थो.

दो.सं.

प.थो.

पा.थो.

प्र.सं.

प्रा.

पृ.

पं.

म.सं.वि.

वि.सं.

सं.

पूर्ण रूप

इस्वी संवत्

चौथो थोपा

डाक्टर

तेस्रो थोपा

दोस्रो थोपा

दोस्रो संकरण

पहिलो थोपा

पाँचौं थोपा

प्रथम संकरण

प्राध्यापक

पृष्ठ

पण्डित

महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय

विक्रम संवत्

संवत्